श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष- अभ्यास - ५

अक्तुबर-२०१६

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर विना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. जंबुद्वीप के बराबर मध्य में ..... नाम का पीला सुवर्णमय पर्वत है ।
२. नवीन शरद ऋतु का सूर्य भी ..... गुणों से उन्हें पा सकता नहीं ।
३. धर्म के लिये अनुकुल देश एवं ..... मनुष्यों का सहवास अपेक्षित होता है ।
४. जिसके उदय से थोडा भी पच्चखाण उदय में न आवे वह ..... कषाय है ।
५. केवल ज्ञानी राजर्षी पहले ..... नगर के राजा थे ।
६. स्त्री पुत्र परिवार इन वस्तुओं पर ..... करने जैसी नहीं ।
७. हरिवर्ष क्षेत्र और महाविदेह क्षेत्र को ..... पर्वत अलग करता है ।
८. यह ..... लकडी के समान है ।
९. हे विदेह देश के राजा, रागादि से नहीं जीते गये ..... प्रभु तुम्हें में नमस्कार करता हूँ ।
१०. लोभ को काबू में लाने के लिये ..... व्रत का पालन करने की खास आवश्यकता है ।
११. व्यक्त ब्राम्हण को वेद पदो से ..... के विषय में शंका हुई ।
१२. तीनो वेद ..... के भेद हैं ।
१३. कुविकल्प करके बाजु की दिशा की भूमि के मील कम कर के दूसरी दिशा के मील बढाये तो ..... अतिचार लगता है ।
१४. भवान्तर में भी जीव को हैरान परेशान करे ऐसा ..... है ।
१५. सिद्ध पुरुष ने द्रव्यार्थी पुरुषों को देवाधिष्ठित महिमावंत ..... देकर उसकी विधि बताई ।
१६. पांडुक वन ..... शिखर पर है ।
१७. अभी प्रचलित द्वादशांगी ..... की ही है ।
१८. जिनपूजा करते पापहेतुक वचन और पाप हेतुक ..... तो अत्यन्त त्याज्य है ।
१९. क्षेत्र की सरहद बनकर रहे हुए ..... पर्वत लंब चौरस आकार के है ।
२०. अतिशय प्रशंसा करने योग्य सुंदर रुपवाले ..... आप मुझे समाधि दो ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. मजीठ के रंग जैसा कौन सा कषाय है ?
२. मैं चातुर्मास में तीर्थयात्रा के अतिरिक्त कहीं बाहर नहीं जाऊँगा, यह नियम किस व्रत के सुंदर पालन के लिये ले सकते है ?
३. संसार के भय को दूर करने वाले कौन से भगवान है ?
४. आत्मा सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र की आराधना द्वारा पंचम गति को कौनसी पूजा से पा सकता है ।
५. सौमनस और विद्युतप्रभ किस क्षेत्र को घेर कर रहे हुए हैं ?
६. जीव किसकी शुद्धि अशुद्धि के कारण सम्यक्त्व अथवा मिथ्यात्व पाते हैं ?
७. सुधर्मा स्वामी जीव का क्या समझकर दीक्षा लेकर साधु बने ?
८. हैरण्यवंत क्षेत्र तथा ऐरावत क्षेत्र के बीचोंबीच कौन सा पर्वत आया है ?
९. किस कषाय के उदय में मरे तो जीव मनुष्य गति में जाए ?
१०. किस तरह हुई जिनराज की आशातना भी जीव को दुःखदायी है ?
११. व्यक्त स्वामी दीक्षा लेकर कौन सा सिद्धांत समझे ?
१२. रुप के गुणों से कौन प्रभुजी को पा सकता नहीं ?
१३. देवकुरु और उत्तरकुरु क्षेत्र में कौन से पर्वत आये हुए हैं ?
१४. प्रभुजी को जन्माभिषेक के लिये इन्द्र उन्हें कहाँ ले जाता है ?
१५. नीचे की दिशा के निश्चित प्रमाण से अतिक्रमण किया हो तो कौन सा अतिचार लगता है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) अमरा २) पइस ३) निअगोअं ४) शृगालो ५) पुरिसित्थ ६) स्मृतेभृंश ७) फुंफुम ८) सरयससी ९) अहक्खाय ११) सोहं १२) पुव्वं १३) गण १४) मुत्ति १५) अेसअहं १६) विवरीअं १७) खंजण १८) तिणिस-लया १९) पायन्न २०) धरणीधर

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) यश कीर्ति	१) युक्ति
२) गोमुत्रिका	२) माया
३) सेतुबंध	३) वक्षस्कार
४) दांत की पंक्ति	४) वस्त्र परिधान
५) परिभ्रमण	५) दसों दिशाओं
६) मर्यादा	६) समवसरण
७) उत्तर दिशा	७) भेड के सींग
८) अपापापुरी	८) स्निग्ध
९) शठता	९) दिशा का नियमन
१०) मुक्ति	१०) द्रव्य संचय

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. छठे व्रत में कितनी दिशा में जाने आने का नियम करते हैं ?
२. चारित्र मोहनीय कषाय के कुल भेद कितने ?
३. तीर्थंकर भ. के जन्माभिषेक करने की शीलाओं की लम्बाई कितनी ?
४. सिद्ध भगवान के कितने गुणों को प्रगट करने के लिये अष्ट-प्रकारी पूजा करनी चाहिये ?
५. मेरु पर्वत के पूर्व में महाविदेह क्षेत्र की कितनी विजय आती है ?
६. व्यक्त स्वामी के चारित्र पर्याय में छद्मस्थ काल कितना ?
७. तुंबफल के बीज कितनी बार हल चलाये खेत में बोने थे ?
८. सुधर्मस्वामी के ज्ञान से आकर्षित होकर कितने ब्राम्हण उनके शिष्य बने ?
९. दीर्घ वैताढ्य पर्वतों की ऊँचाई कितनी है ।
१०. दिक् परिमाण व्रत के पालन के लिये कितने नियम हमें सहायता कर सकते हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. प्रत्याख्यानी कषाय देश विरती चारित्र न पाने दे ।
२. प्रभुजी संसार के भय को भगाने वाले है ।
३. दिशाव्रत का प्रमाण कर फिर उसे विस्मृत कर दे वह स्मृतिअंतर्धान अतिचार है ।
४. वारुणी देवी ने श्रवण नक्षत्र में बालक को जन्म दिया ।
५. परमात्मा की द्रव्यपूजा करते हुए परमात्मा के प्रति उत्कृष्ट आदर रखना चाहिये ।
६. वृत - वैताढ्य पर्वत गोल प्याले जैसे आकार के हैं ।
७. नये कर्म बंधवाकर संसार को बढाने वाले ये वेद कषाय मोहनीय कर्म हैं ।
८. पर्वतों में श्रेष्ठ मेरु पर्वत से अधिक स्थिरता वाले अजितनाथ भ. हैं ।
९. जिन वस्त्रों को पहनकर बडीनिति - लघुनीति या भोजन किया है वे वस्त्र पूजा के लिये अयोग्य मानना ।
१०. सुधर्मा स्वामी ने सर्व समर्पित भाव से ३५० शिष्यों के साथ दिक्षा लेकर सच्चे साधु बने ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. सरलता आदि गुणों वाली आत्मायें मनुष्यपने में रह मरकर भी मनुष्य का अवतार पाती हैं ।
२. इन तीनों जगत में रहे हुए सुंदर पदार्थो की इस जीव को प्राप्ति होती है तो भी उसका अगाध लोभ समुद्र तृप्त नहीं होता है ।
३. संयम की सुंदर आराधना करते हुए घाती कर्मो को खपाकर केवलज्ञान पाया ।
४. हाथी के दांत जैसे ये पर्वत होने से गजदंतगिरि कहलाते हैं ।
५. प्रभाव से जानने योग्य ऐसे हे शांतिजिन, आप मुझे समाधि दो ।
६. मिश्र मोहनीय कर्म के उदय में जिनधर्म पर राग भी नहीं होता और द्वेष भी नहीं होता समभाव होता है ।
७. मैं चातुर्मास में तीर्थयात्रा के अतिरिक्त कहीं बाहर नहीं जाऊँगा ।
८. स्वप्न के जैसा यह संसार है, इन्द्रजाल जैसा सारा रुप है ।
९. जो वस्तु कभी भी नष्ट होती हो उसकी जानकारी पाने से क्या फायदा ।
१०. प्रभुजी के फल पूजा द्वारा संपूर्ण आराधना के सार रुप मोक्षफल को साधक प्राप्त करता है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जंबुद्वीप में कुल कितने पर्वत हैं ? गजदंतगिरि पर्वतों का वर्णन करो ।
२. देवपूजा के लिये द्रव्य शुद्धि समजाओ । ३. कर्म विज्ञान की इक्कसवीं गाथा का विषेशार्थ समझाओ ।
४. लोभ की भयानकता और दिशाव्रत का रहस्य समझाओ । ५. व्यक्त स्वामी की शंका और वीरप्रभु का समाधान समझाओ ।

જવાબ પત્ર નીચે ના સરનામે મોકલશોજી
શત્રુંજય એકેડમી, શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી જૈન મંદિર, સ્ટેશન રોડ, ચાળીસગામ – ૪૨૪ ૧૦૧.
જી. જળગામ. મો. ૯૦૨૮૨૪૨૪૮૪
સાચા પરિણામ અને સાચા ઉત્તર માટે વેબ સાઈટ www.shatrunjayacademy.com